टिप्पणी

1

व्यवसाय की प्रकृति एवं क्षेत्र

अपने दिन प्रति दिन के जीवन में आप विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में व्यस्त रहते हैं। यदि कोई आपसे पूछता है कि आप जीवन में क्या बनना चाहते हैं या भविष्य में क्या करना चाहते हैं; आपका उत्तर होगा– ''मैं कोई अच्छी नौकरी करना चाहता हूं या फिर मैं डॉक्टर, इन्जीनियर, नर्तक अथवा एक संगीतकार बनना चाहता हूँ''। या फिर आप कहेंगे "मैं अपना व्यवसाय करना चाहता हूँ"। लेकिन प्रश्न यह है कि आप इनमें से कोई भी क्रिया क्यों करना चाहते हैं? स्वाभाविक है कि यह सब आप जीविकोपार्जन के लिए करना चाहते हैं। मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि जीविकोपार्जन के लिए की गई प्रत्येक मानवीय क्रिया आर्थिक क्रिया कहलाती है। इस पाठ में हम इन्हीं सब क्रियाओं, उनके वर्गीकरण एवं इससे सम्बन्धित पहलुओं के विषय में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- मानवीय क्रियाओं को परिभाषित कर सकेंगे;
- मानवीय क्रियाओं को आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाओं में वर्गीकृत कर सकेंगे;
- व्यवसाय में लाभ की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे;
- आर्थिक क्रियाओं के विभिन्न वर्गों का अर्थ एवं उनकी विशेषताएँ को लिख सकेंगे;
- व्यवसाय की अवधारणा को समझा सकेंगे एवं पेशे तथा रोजगार से इसका अन्तर्भेद कर सकेंगे;
- आधुनिक समाज में व्यवसाय के उद्देश्य एवं महत्व का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक क्रियाओं की पहचान कर सकेंगे।

टिप्पणी

1.1 मानवीय क्रियाएं

प्रत्येक व्यक्ति कोई न कोई क्रिया अवश्य करता है। यह खेती करना, खाना पकाना, फुटबाल खेलना, कहानी की किताब पढ़ना, विद्यालय में पढ़ना, कॉलेज में पढ़ाना, दफ्तर में कार्य करना, पार्क में धीमी गति से दौड़ना आदि कुछ भी हो सकता है। यदि आप यह जानने का प्रयत्न करें कि लोग कोई न कोई कार्य क्यों कर रहे हैं तो आप पायेंगे कि इन क्रियाओं को करने से वे अपनी किसी न किसी आवश्यकता या इच्छा को संतुष्ट करने की कोशिश करते हैं। वह सभी क्रियाएं जो मनुष्य अपनी आवश्यकता या इच्छा की संतुष्टि के लिए करता है, **मानवीय क्रियाएं** कहलाती हैं।

यद्यपि सभी मानवीय क्रियाएं किसी न किसी इच्छा या आवश्यकता की पूर्ति करती हैं फिर भी उद्देश्य एवं अन्तिम परिणाम के आधार पर वह एक दूसरे से भिन्न हैं। उदाहरण के लिए, आइए खाना पकाने की क्रिया को ही लें– एक ओर तो मां घर पर परिवार के लिए खाना बना रही है और दूसरी ओर एक बावर्ची होटल में खाना बना रहा है। यहाँ आप पायेंगे कि मां एवं बावर्ची द्वारा खाना बनाने के उद्देश्य एवं अन्तिम परिणाम अलग–अलग हैं। पहली स्थिति में उद्देश्य धन की अपेक्षा किए बिना परिवार को खाना खिलाना है जबकि दूसरी में खाना पकाना वेतन अथवा मजदूरी के रूप में धनोपार्जन हेतु उसकी नौकरी का एक भाग है। पहली स्थिति में अन्तिम परिणाम 'स्वयं की संतुष्टि' तथा 'परिवार की देखभाल' करना है जब कि दूसरी में यह जीविका के रूप में 'धनोपार्जन' है।

मानवीय क्रियाएं जो धन कमाने अथवा जीविकोपार्जन के लिए की जाती हैं **आर्थिक क्रियाएं** कहलाती हैं। जबकि अन्य प्रकार की क्रियाएं जो स्वयं की संतुष्टि के लिए की जाती हैं **अनार्थिक क्रियाएं** कहलाती हैं। आर्थिक क्रियाओं के उदाहरण हैं : किसान द्वारा खेती करना, मजदूरी/वेतन के लिए एक व्यक्ति का कारखाने में काम करना, एक व्यवसायी द्वारा वस्तुओं का क्रय–विक्रय करना आदि। दूसरी ओर ध्यान लगाना, शारीरिक स्वस्थता के लिए खेल–कूद में भाग लेना, संगीत सुनना, बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत कार्य करना आदि अनार्थिक क्रियाओं के उदाहरण हैं।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. आर्थिक क्रियाओं को परिभाषित कीजिए।
2. नीचे कुछ अनार्थिक क्रियाएं दी गई हैं। इन्हें आर्थिक क्रियाओं में परिवर्तित कीजिए:

   उदाहरण : एक नर्स द्वारा अपने बीमार बेटे की देखभाल करना। (अनार्थिक क्रिया)

   एक नर्स का अस्पताल में मरीजों की देखभाल करना। (आर्थिक क्रिया)

   (क) एक व्यक्ति का अपने बाग में कार्य करना।

टिप्पणी

(ख) एक स्त्री द्वारा अपने पति के लिए खाना पकाना।

(ग) एक व्यक्ति द्वारा अपने घर में सफेदी कराना।

(घ) एक अध्यापक द्वारा घर पर अपने बेटे को पढ़ाना।

(ङ) एक चार्टर्ड अकाउन्टैंट द्वारा अपने खाते तैयार करना।

1.2 आर्थिक क्रियाओं का वर्गीकरण

आर्थिक क्रिया व्यक्ति द्वारा एक बार भी की जा सकती है या फिर निरन्तर भी। उदाहरण के लिए, यदि आप कमीज की सिलाई करना जानते हैं और एक दिन आप अपने मित्र के लिए कमीज की सिलाई करते हैं; इसके बदले वह आपको कुछ राशि का भुगतान करता है तो निश्चित रूप से यह एक आर्थिक क्रिया है क्योंकि आपको कुछ मौद्रिक लाभ हो रहा है। लेकिन यह क्रिया आपके द्वारा एक बार की गई है। यदि आप लगातार कमीजों की सिलाई करना प्रारम्भ कर दें तथा इसके बदले पैसा लेने लगें तो हम कहेंगे कि आप एक निरन्तर चलने वाली आर्थिक क्रिया कर रहे हैं। ध्यान देने योग्य बात है कि किसी एक विशेष आर्थिक क्रिया को निरन्तर करके लोग अपनी जीविका अर्जित करने की कोशिश करते हैं। अतः जब लोग अपनी जीविका कमाने के लिए निरन्तर कुछ क्रियाएं करते हैं तो इसे **धंधा** कहते हैं।

वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी धंधे में लगा है। धंधों को निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है :–

(क) पेशा; (ख) रोजगार; तथा (ग) व्यवसाय।

आइए, इन धंधों के सम्बन्ध में कुछ और विस्तार से जानें।

1.2.1 पेशा

आप डॉक्टरों से परिचित हैं। वे कौन हैं तथा क्या करते हैं? मूल रूप से ये वे व्यक्ति हैं जिनको मरीजों की जांच करने, उनकी बीमारी का पता लगाने, बीमारी का इलाज करने का विशिष्ट ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त है। इन सभी कार्यों के लिए वे अपने मरीजों से फीस लेते हैं। इसी प्रकार चार्टर्ड अकाउनटैंट्स हैं, जो लेखांकन एवं कर आदि मामलों के विशेषज्ञ होते हैं तथा इन कार्यों के सम्बन्ध में लोगों एवं संगठनों से फीस लेकर उन्हें सहायता प्रदान करते हैं। और भी नजर दौड़ाएं तो हम पाएंगे कि इन्जीनियर, वास्तुकार, फिल्म अभिनेता, नर्तक, कलाकार तथा और भी बहुत से लोग हैं जो अपने-अपने क्षेत्रों में विशिष्ट ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करके कार्यरत हैं। ये सभी पेशेवर व्यक्ति कहलाते हैं तथा जिन क्रियाओं को ये करते हैं उन्हें **पेशा** कहा जाता है।

पेशे की अवधारणा को और स्पष्ट करने के लिए आइए इसके कुछ आधारभूत लक्षणों पर नजर डालें जो संक्षेप में निम्नलिखित हैं :

टिप्पणी

(क) पेशा वह धंधा है जिसके लिए व्यक्ति को विशिष्ट ज्ञान एवं दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है।

(ख) इस प्रकार की सेवाओं के प्रतिफल के रूप में जो राशि उन्हें प्राप्त होती है, उसे 'फीस' कहते हैं।

(ग) अधिकांश पेशेवर लोगों का विनियमन एक पेशेवर संस्थान द्वारा किया जाता है जो उस आचार संहिता को बनाती हैं जिसका पालन पेशे के सदस्य करते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में चार्टर्ड अकाउन्टैंट्स का विनियमन भारतीय चार्टर्ड अकाउन्टैंट्स संस्थान के द्वारा, क्रिकेट खिलाड़ियों का अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद् द्वारा होता है।

(घ) अधिकांशतः पेशेवर लोग महाविद्यालय, विश्वविद्यालय अथवा विशिष्ट संस्थानों से विशिष्ट ज्ञान का अर्जन करते हैं। कुछ स्थितियों में लोग इस प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्रशिक्षण द्वारा या उस क्षेत्र के विशेषज्ञ से प्रशिक्षण प्राप्त करके करते हैं; जैसे कि नर्तक, संगीतज्ञ आदि।

(ङ) पेशेवर लोग सामान्यतः अकेले कार्य करते हैं, और अपनी सेवाओं के प्रतिफल के रूप में फीस लेते हैं तथा पेशारत कहलाते हैं। कुछ पेशेवर लोग ऐसे भी हैं जो संगठनों में कर्मचारी अथवा सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं।

(च) यद्यपि सभी पेशेवर लोग फीस लेते हैं लेकिन फिर भी उनका मूल उद्देश्य सेवा प्रदान करना है। उन्हें अपने इस विशिष्ट ज्ञान का प्रयोग करके लोगों का शोषण नहीं करना चाहिए।

वह सभी आर्थिक क्रियाएं जिनमें पेशेवर लोग प्रशिक्षण एवं दक्षता के आधार पर विशेषज्ञतापूर्ण एवं विशिष्ट प्रकृति की व्यक्तिगत सेवाएं प्रदान करते हैं तथा जिनमें कुछ नियमों (आचार संहिता) का पालन करना होता है, पेशा कहलाती हैं।

1.2.2 रोजगार

आपने लोगों को प्रतिदिन काम करने के लिए दफ्तरों, कारखानों व फर्मों आदि में जाते हुए देखा होगा। ये वे लोग हैं जिनकी सेवाएं मजदूरी अथवा वेतन के बदले प्राप्त की जाती हैं। हम कहेंगे कि ये लोग रोजगार में हैं। हम देखते हैं कि एक डाकिया डाक विभाग में पत्र बांटने के रोजगार में लगा है। यहां डाक विभाग 'नियोक्ता' तथा डाकिया 'कर्मचारी' कहलाएगा। डाकिया कार्य की शर्तों के अनुसार कार्य करता है तथा प्रतिफल के रूप में प्रतिमाह वेतन प्राप्त करता है। रोजगार के प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं :

(क) यह एक ऐसा धंधा है जिसमें एक व्यक्ति (कर्मचारी) दूसरे व्यक्ति (नियोक्ता) के लिए कार्य करता है।

(ख) कार्य करने की कुछ शर्तें होती हैं जैसे कार्य के घंटे (एक दिन में कितने घंटे), कार्य

टिप्पणी

की अवधि (सप्ताह अथवा महीने आदि में कितने दिन अथवा कितने घंटे), छुट्टियों की सुविधा, वेतन/मजदूरी, कार्य-स्थान आदि।

(ग) कर्मचारियों को उनके कार्य के प्रतिफल के रूप में वेतन (सामान्यतः जिसका भुगतान प्रति माह किया जाता है) अथवा मजदूरी (सामान्यतः जिसका भुगतान प्रतिदिन/साप्ताहिक किया जाता है) प्राप्त होती है। यह राशि साधारणतया पूर्वनिर्धारित होती है, पारस्परिक सहमति से तय होती है तथा समय-समय पर बढ़ती रहती है।

(घ) कानूनी रूप से नियोक्ता एवं कर्मचारी का सम्बन्ध ठेके अथवा अनुबंध पर आधारित होता है तथा दोनों पक्षों में से किसी भी पक्ष द्वारा शर्त उलंघन करने पर दूसरे पक्ष को कानूनी कार्यवाही का अधिकार होता है।

(ङ) कुछ रोजगार ऐसे होते हैं जिनके लिए किसी तकनीकी शिक्षा अथवा विशिष्ट दक्षता की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन कुछ रोजगार कौशल, विशिष्टता एवं तकनीक अपेक्षित होते हैं जिनके लिए एक स्तर विशेष की मूलभूत तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता होती है।

(च) रोज़गार का उद्देश्य मजदूरी एवं वेतन के रूप में निश्चित आय प्राप्त करना है।

एक ऐसी आर्थिक क्रिया, जिसे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए, निश्चित प्रतिफल के बदले, सेवा अनुबंध के अन्तर्गत करता है, रोज़गार कहलाती है।

1.2.3 व्यवसाय

आपने टाटा कम्पनी समूह के सम्बन्ध में तो सुना ही होगा। वे नमक से लेकर ट्रक एवं बसों तक बहुत–सी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और उन्हें हम और आप जैसे लोगों को बेचते हैं। इस प्रक्रिया में वे लाभ कमाते हैं। जरा अपने पास के दुकानदार पर नजर डालें। वह क्या करता है? वह बड़ी मात्रा में माल खरीदता है तथा उन्हें छोटी-छोटी मात्रा में हमें बेचता है। वह इस प्रक्रिया में लाभ कमाता है। इसी प्रकार से एक केबल टेलीविजन परिचालक (केबल ऑपरेटर) कुछ मूल्य के बदले हमें अपने टेलीविजन पर विभिन्न चैनल देखने की सुविधा प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में केबल टेलीविजन परिचालक लाभ कमाता है। ये सभी व्यवसाय में लगे हुए माने जाते हैं और व्यवसायी कहलाते हैं। ये सभी अपनी क्रियाएं लाभ कमाने के लिए नियमित रूप से करते हैं। अतः 'व्यवसाय' शब्द से अभिप्राय उन सभी मानवीय क्रियाओं से हैं जिनमें लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं एवं सेवाओं का नियमित उत्पादन एवं विनिमय किया जाता है।

व्यवसाय की परिभाषा एक ऐसी आर्थिक क्रिया के रूप में दी जा सकती है जिनमें लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं एवं सेवाओं का नियमित उत्पादन क्रय, विक्रय, हस्तान्तरण एवं विनिमय के लिए किया जाता है।

टिप्पणी

हम बहुत से व्यक्तियों को व्यवसाय में लगा हुआ देखते हैं जैसे कारखाना मालिक, परिवहनकर्ता, बैंकर, व्यापारी, दर्जी, टैक्सी चालक आदि। ये सभी विनिर्माण अथवा व्यापार (क्रय एवं विक्रय) अथवा सेवा प्रदान करने के कार्य कर रहे हैं। इन्होंने अपनी कुछ राशि का निवेश किया है, ये जोखिम उठाते हैं तथा लाभ कमाने के उद्देश्य से कार्य करते हैं। अतः व्यवसाय की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

(क) यह एक ऐसा धंधा है जिसमें व्यक्ति वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिर्माण अथवा क्रय–विक्रय में लगा रहता है। यह वस्तुएं उपभोक्ता वस्तुएं अथवा पूंजीगत वस्तुएं हो सकती हैं। इसी प्रकार सेवाएं परिवहन, बैंकिंग, बीमा आदि के रूप में हो सकती हैं।

(ख) इसमें क्रियाएं नियमित रूप से की जाती हैं। एक अकेला लेन–देन व्यवसाय नहीं कहलाता। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति अपनी पुरानी कार को लाभ पर बेचता है तो हम इसे व्यावसायिक क्रिया नहीं कहेंगे। लेकिन यदि वह नियमित रूप से पुरानी कारों का क्रय कर उन्हें बेचने का कार्य करता है तो हम कहेंगे कि वह व्यवसाय में लगा है।

(ग) व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना है। यह व्यवसाय के अस्तित्व में रहने के लिए अनिवार्य है। हां, यह अवश्य है कि यह वस्तुएं एवं सेवाएं प्रदान करके ही किया जाता है।

(घ) सभी व्यवसायों के लिए कुछ न कुछ पूंजी की आवश्यकता होती है जो रोकड़ अथवा सम्पत्ति अथवा दोनों के रूप में हो सकती है। इसे साधारणतया स्वामी द्वारा उपलब्ध कराया जाता है अथवा स्वामी अपने जोखिम पर उधार लेता है।

(ङ) व्यवसाय में आय सदैव अनिश्चित होती है क्योंकि भविष्य अनिश्चित है तथा कुछ ऐसे तत्व हैं जो आय को प्रभावित करते हैं और जिन पर व्यवसायी का कोई वश नहीं है। इस प्रकार प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम का तत्व होता है और इसे व्यवसायी अर्थात स्वामी को वहन करना होता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. 'पेशा' शब्द को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।

2. नीचे कुछ क्रियाओं की एक सूची दी गई है। इन्हें व्यवसाय, पेशा अथवा रोज़गार में वर्गीकृत कीजिए। इसके लिए प्रश्न के अन्त में दिए गये गोलों में प्रश्न संख्या भरें।

   (क) आपके क्षेत्र के थाने में ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मी।

   (ख) एक शिक्षा संस्थान में कार्यरत अध्यापक।

टिप्पणी

(ग) राज्य सड़क परिवहन निगम की बसों को चलाने वाला ड्राइवर।

(घ) एक टैक्सी ड्राइवर जो अपनी स्वयं की टैक्सी चलाता है।

(ङ) एक मछुआरा जो गांव में मछली बेचता है।

(च) गोपाल नियमित रूप से घर पर ग्राहकों के कपड़ों की सिलाई करता है।

(छ) कारखाने में कार्यरत एक दैनिक मज़दूर।

(ज) एक माली जो कॉलेज में उद्यानों की देखभाल करता है।

(झ) एक वकील जो न्यायालय में वकालत करता है।

(ञ) एक इन्जीनियर जो अपनी सलाहकार फर्म चलाता है।

व्यवसाय	पेशा	रोज़गार
○○○○ ○○○○	○○○○ ○○○○	○○○○ ○○○○

1.2.4 व्यवसाय, पेशा एवं रोज़गार में तुलना

व्यवसाय की विशेषताओं का अध्ययन करने के पश्चात्, आइए, इसका पेशा एवं रोज़गार से अन्तर्भेद करें।

आधार	व्यवसाय	पेशा	रोज़गार
(क) स्थापना	व्यवसाय को प्रारम्भ करने का निर्णय एवं जब भी आवश्यकता हो, पंजीयन जैसी कानूनी औपचारिकताओं को पूरा करना।	एक पेशागत संगठन की सदस्यता अनिवार्य है।	नियोक्ता के साथ सेवा अनुबन्ध करना।
(ख) योग्यता	किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं है।	पेशागत ज्ञान एवं प्रशिक्षण आवश्यक है।	नियोक्ता एवं संबधित काम की आवश्यकतानुसार योग्यता की आवश्यकता है।
(ग) पूँजी	पूंजी निवेश अनिवार्य है। इसकी मात्रा व्यवसाय के पैमाने एवं प्रकृति पर निर्भर करती है।	स्थापना हेतु कुछ पूँजी निवेश की आवश्यकता है।	पूँजी निवेश की कोई आवश्यकता नहीं है।
(घ) कार्य की प्रकृति	वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन अथवा क्रय–विक्रय।	विशेषज्ञ सेवाएं।	कार्य निष्पादन (कार्य को पूरा करना)।

टिप्पणी

(ड़) प्रतिफल	लाभ।	पेशेवर फीस।	मजदूरी अथवा वेतन।
(च) जोखिम	हानि का जोखिम है।	उपयुक्त फीस न मिलने का जोखिम है।	जब तक व्यवसाय/कार्यालय चल रहा है कोई जोखिम नहीं है।
(छ) उद्देश्य	लाभ कमाना।	सेवा प्रदान करना, यद्यपि फीस ली जाती है।	जीविकोपार्जन करना।

1.3 व्यवसाय का महत्व

व्यवसाय आधुनिक समाज का एक अभिन्न अंग है। यह लाभ अर्जन की एक सुनियोजित एवं संगठित क्रिया है। इसका सम्बन्ध समान आर्थिक लक्ष्यों की दिशा में कार्यरत व्यक्तियों की क्रियाओं से है। बिना व्यवसाय के आधुनिक समाज का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। व्यवसाय के महत्व का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है :

(क) व्यवसाय उचित समय और उचित स्थान पर श्रेष्ठत्तर गुणवत्ता वाली विविध वस्तुओं और सेवाओं को उपलब्ध कराके लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाता है।

(ख) यह कार्य करने और जीविकोपार्जन करने के अवसर प्रदान करता है। इस तरह इससे देश में रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं जिससे गरीबी दूर होती है।

(ग) इससे राष्ट्र के सीमित संसाधनों का उपयोग होता है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं के अधिक से अधिक उत्पादन में सहायता मिलती है।

(घ) यह उत्तम किस्म की वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन तथा निर्यात द्वारा राष्ट्रीय छवि में सुधार लाता है। अन्तराष्ट्रीय व्यापार मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग लेकर यह बाहर के देशों में हमारी प्रगति और उपलब्धियों का प्रदर्शन भी करता है।

(ङ) इससे देश के लोगों को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता वाली वस्तुएं प्रयोग करने का अवसर मिलता है। ऐसा विदेशों से वस्तुएं आयात करके अथवा अपने ही देश में आधुनिक तकनीक के उपयोग से श्रेष्ठ गुणवत्ता वाली वस्तुओं के उत्पादन द्वारा सम्भव है।

(च) इससे निवेशकों को उनके पूँजी निवेश पर अच्छा प्रतिफल मिलता है और व्यवसाय को विकास तथा विस्तार के श्रेष्ठ अवसर प्राप्त होते हैं।

(छ) पर्यटन सेवाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रायोजन, व्यापार प्रदर्शनी आदि के माध्यम से यह देश में सामाजिक हितों को बढ़ावा देता है। इससे देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोग एक दूसरे के साथ अपनी संस्कृति, परम्परा तथा आचार–विचारों का आदान–प्रदान कर पाते हैं। इस तरह इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

टिप्पणी

(ज) यह भिन्न–भिन्न देशों के लोगों को अपनी संस्कृति के आदान–प्रदान के अवसर भी प्रदान करता है। इस प्रकार यह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शांति को बनाए रखने में मदद करता है।

(झ) यह विज्ञान तथा तकनीक के विकास में भी सहायक होता है। यह नए उत्पादों एवं सेवाओं की खोज में शोध एवं विकास कार्यों पर बहुत अधिक धन व्यय करता है। इस प्रकार औद्योगिक शोधों के परिणामस्वरूप अनेक नवीन उत्पादों तथा सेवाओं का विकास होता है।

1.4 व्यवसाय के उद्देश्य

एक व्यावसायिक संगठन एक निर्धारित समय में जो कुछ प्राप्त करना चाहता है उसे व्यावसायिक उद्देश्य कहते हैं। साधारणतया यह माना जाता है कि व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य है लाभ कमाना तथा अपने स्वामियों के हितों की रक्षा करना। लेकिन फिर भी कोई भी व्यवसाय अपने कर्मचारियों, ग्राहकों तथा समग्र समाज के हितों की अनदेखी नहीं कर सकता। व्यवसाय के उद्देश्य राष्ट्रीय लक्ष्य एवं आकांक्षाओं तथा विश्व की भलाई को लक्षित करने वाले होने चाहिए। अतः व्यवसाय के उद्देश्यों को निम्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

(क) आर्थिक उद्देश्य

(ख) सामाजिक उद्देश्य

(ग) मानवीय उद्देश्य

(घ) राष्ट्रीय उद्देश्य

(ङ) वैश्विक उद्देश्य

आइए, इन उद्देश्यों पर विस्तार से विचार करें।

(क) आर्थिक उद्देश्यों से अभिप्राय लाभ कमाने एवं अन्य उन उद्देश्यों से है जिनका व्यवसाय के लाभ कमाने पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। व्यवसाय के प्रमुख आर्थिक उद्देश्यों में से कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं :–

(i) पर्याप्त लाभ कमाना;

(ii) नये बाजार ढूंढना एवं और अधिक ग्राहक बनाना;

(iii) व्यावसायिक क्रियाओं का विकास एवं विस्तार;

(iv) वस्तुओं एवं सेवाओं में नव–प्रवर्तन एवं सुधार करना;

(v) उपलब्ध संसाधनों का श्रेष्ठतम उपयोग करना;

टिप्पणी

(ख) **व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्य** वे हैं जिन्हें समाज के हित में प्राप्त करना आवश्यक होता है। कुछ प्रमुख सामाजिक उद्देश्य इस प्रकार हैं :

(i) समाज के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन तथा आपूर्ति करना;

(ii) वस्तुओं को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना;

(iii) जमाखोरी, काला बाजारी, अधिक मूल्य वसूलना आदि अनुचित व्यवहारों से बचाव;

(iv) समाज के सामान्य कल्याण एवं उत्थान कार्यों में योगदान देना;

(v) निवेशकों को उचित प्रतिफल सुनिश्चित करना;

(vi) उपभोक्ता शिक्षण के लिए कदम उठाना;

(vii) प्राकृतिक संसाधन एवं वन्य जीवन की सुरक्षा करना तथा पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करना।

(ग) **व्यवसाय के मानवीय उद्देश्य** मूल रूप से कर्मचारियों के हितों की सुरक्षा और उनके कल्याण से सम्बन्धित हैं।

कुछ प्रमुख मानवीय उद्देश्य इस प्रकार हैं :

(i) कर्मचारियों को उचित प्रतिफल एवं अभिप्रेरक प्रदान करना;

(ii) कर्मचारियों के लिए बेहतर कार्य परिस्थितियां एवं उचित कार्य वातावरण की व्यवस्था करना;

(iii) कार्य को रोचक एवं चुनौतीपूर्ण बनाकर एवं सही पद पर सही व्यक्ति की नियुक्ति कर कर्मचारियों को कार्य संतुष्टि प्रदान करना;

(iv) कर्मचारियों को अधिक से अधिक उन्नति के अवसर प्रदान करना;

(v) कर्मचारियों के विकास के लिए प्रशिक्षण एवं विकास कार्यक्रमों की व्यवस्था करना; एवं

(vi) समाज के पिछड़े वर्गों एवं शारीरिक तथा मानसिक रूप से अक्षम लोगों को रोजगार देना।

(घ) **व्यवसाय के राष्ट्रीय उद्देश्य** राष्ट्रीय लक्ष्यों और आकांक्षाओं की प्राप्ति करना है। यह उद्देश्य इस प्रकार हैं :

(i) रोजगार के अवसर पैदा करना;

(ii) सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना;

टिप्पणी

(iii) राष्ट्रीय हित एवं प्राथमिकताओं के अनुरूप वस्तुओं का उत्पादन एवं उनकी आपूर्ति करना;

(iv) कर एवं अन्य बकाया राशि का ईमानदारी से एवं नियमित रूप से भुगतान करना;

(v) अच्छे औद्योगिक सम्बन्धों को बढ़ावा देकर राज्यों को कानून व्यवस्था बनाने में मदद करना;

(vi) समय समय पर सरकार द्वारा बनाई गई आर्थिक एवं वित्तीय नीतियों को लागू करना;

(ङ) **व्यवसाय के वैश्विक उद्देश्य** वैश्विक बाजार की चुनौतियों का सामना करना है। कुछ वैश्विक उद्देश्य इस प्रकार हैं:

(i) वैश्विक प्रतियोगी वस्तुओं एवं सेवाओं को उपलब्ध कराना, एवं

(ii) अपनी व्यावसायिक क्रियाओं का विस्तार कर धनी एवं गरीब राष्ट्रों के बीच की असमानताओं को कम करना।

1.4.1 व्यवसाय में लाभ की भूमिका

लाभ की व्यवसाय में महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यवसाय में लाभ की भूमिका को दर्शाने वाले महत्वपूर्ण बिन्दु नीचे दिए गये हैं :

1. **जीवित रहना :** लाभ किसी भी संगठन को पुरानी सम्पत्तियों के प्रतिस्थापन में सहायक होता है, जिससे संगठन के चलते रहने की क्षमता बढ़ जाती है।

2. **भविष्य में विकास एवं विस्तार :** अतिरिक्त अर्जित लाभ को विस्तार के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। नये क्षेत्रों में प्रवेश से उद्यम के विकास में सहायता मिलती है।

3. **प्रलोभन :** लाभ व्यवसायी के लिए प्रलोभन है जिसके कारण वह परिश्रम करता है। लाभ व्यवसायी को अधिक से अधिक मेहनत करने के लिए अभिप्रेरित करता है।

4. **प्रतिष्ठा :** जो संगठन लाभ अर्जित करते हैं वह अपने कर्मचारियों को अधिक वेतन/मजदूरी दे सकते हैं। इस प्रकार से जो व्यवसाय लाभ कमा रहे होते हैं, उनकी समाज में साख होती है।

5. **लक्ष्यों की प्राप्ति :** केवल लाभ कमाने वाली व्यवसायिक इकाई ही व्यवसाय के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती है, क्योंकि आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ व्यय करना होता है।

6. **कार्यकुशलता का माप :** किसी भी संगठन की सफलता का मूल्यांकन उसके लाभ से किया जा सकता है। इस प्रकार से लाभ व्यवसाय की सफलता का सूचकांक है। उसके द्वारा व्यवसाय की कार्यकुशलता मापी जा सकती है।

टिप्पणी

7. **व्यवसायियों की जीविका का माध्यम :** लाभ व्यवसाय में लगे व्यक्तियों एवं उनके परिवारों के लिए नियमित आय है।

1.4.2 व्यवसायिक जोखिम

व्यवसाय अनिश्चितताओं से भरा होता है। अनिश्चितताएं कई प्रकार की हो सकती हैं। फैशन में बदलाव अथवा बाजार मूल्य में गिरावट के कारण हानि। उत्पादित वस्तुएं आग, तूफान, चक्रवात, चोरी आदि के कारण भी नष्ट हो सकती हैं। अतः किसी भी व्यवसाय को करने में जोखिम का तत्व होता है। व्यावसायिक जोखिम का अर्थ है भविष्य में किसी अनहोनी घटना के कारण हानि।

व्यावसायिक जोखिम की प्रकृति

1. **अनिश्चितता :** व्यवसाय में जोखिम का कारण होता है, भविष्य की कार्यवाही की अनिश्चितता। बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं से भी व्यवसाय को हानि हो सकती है। हानि मानवीय कारणों से भी हो सकती है, जैसे कि हड़ताल, तालाबन्दी, दुर्घटनाएं, चोरी, डूबत ऋण आदि।

2. **लाभ जोखिम का प्रतिफल है :** व्यवसायिक इकाई, जो जोखिम उठाना चाहती है, अच्छा लाभ कमाती है। अधिक जोखिम का अर्थ है अधिक लाभ।

3. **मापना कठिन :** व्यवसायी को कुछ जोखिमों की सम्भावना का अनुमान हो सकता है, लेकिन वह सभी जोखिमों की भविष्यवाणी नहीं कर सकता। इसीलिए जोखिम को सही–सही नहीं मापा जा सकता।

4. **व्यवसाय का आवश्यक तत्व :** प्रत्येक व्यवसायिक क्रिया में किसी न किसी जोखिम का तत्व होता है। जोखिम उठाना व्यवसाय का आवश्यक तत्व है।

5. **विविधता :** जोखिम की प्रबलता व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार के अनुसार होती है। यदि निवेश अधिक है तो जोखिम भी अधिक होगा। जोखिम का स्तर समय एवं प्रतियोगिता के अनुसार अलग–अलग होगा।

व्यावसायिक जोखिम के कारण

1. **प्राकृतिक कारण :** आग, बाढ़, तूफान, चक्रवात, भूकम्प, सूखा, बिजली का गिरना, बर्फबारी, उफान आदि के परिणाम स्वरूप जीवन, सम्पत्ति एवं आय की हानि होती है। प्राकृतिक कारण व्यवसाय के नियंत्रण से परे हैं।

2. **आर्थिक कारण :** इनका सम्बन्ध बाजार की परिस्थितियों में परिवर्तन से है। आर्थिक कारण के स्वरूप हैं: मांग में उतार–चढ़ाव, मूल्य में उतार–चढ़ाव। सस्ती पूरक वस्तुओं की उपलब्धता, प्रतियोगी व्यावसायिक फर्में आदि।

टिप्पणी

3. **राजनैतिक कारण :** सरकार के गिरने से लाइसेंस नीति एवं कर नीति में बदलाव हो सकता है इससे व्यवसाय को हानि हो सकती है। आयात एवं निर्यात पर प्रतिबन्ध, उच्च कर, ऋणों पर ब्याज दर में वृद्धि से व्यवसाय को हानि हो सकती है। राजनैतिक कारणों का सम्बन्ध सरकार की नीतियों एवं कानूनों में परिवर्तन से है।

4. **मानवीय कारण :** अक्षम प्रबन्धन एवं कर्मचारियों की लापरवाही के कारण हानि हो सकती है। कर्मचारी मशीनों को क्षति पहुँचा सकते हैं। वह हड़ताल कर सकते हैं या तालाबंदी का कारण बन सकते हैं। इन सबके कारण भी हानि होगी। यदि प्रबन्ध उत्पाद की माँग का पूर्वानुमान लगाने में असमर्थ रहता है तो इससे हानि होगी। मानवीय कार्य जैसे – जालसाजी, रोकड़ का दुरुपयोग, वस्तुओं की चोरी, दंगे, युद्ध आदि के कारण जो अनिश्चितता पैदा होती है, उसके कारण भी हानि हो सकती है।

5. **भौतिक एवं तकनीकी कारण :** तकनीक में बदलाव के कारण मशीनें अपने संभावित जीवन काल से पहले ही प्रचलन से बाहर हो सकती हैं। गैस के रिसाव, बायलर के फटने आदि के कारण मशीन काम नहीं कर पाती। सम्पत्तियों के मूल्य में कमी आ सकती है (वजन में कमी, वाष्पीकरणआदि के कारण)। एक और भौतिक कारण है– मार्ग में वस्तुओं की हानि।

पाठगत प्रश्न 1.3

1. मोहन ने हाल ही में अपनी एम.बी.बी.एस. की शिक्षा पूरी की है। उसे अपने लिए धंधे के चुनाव करने में कठिनाई हो रही है। निम्न तालिका को भरने में उसका मार्गदर्शन कीजिए:

यदि वह चुनता है	उसे क्या करना होगा?	उसे प्रतिफल के रूप में क्या मिलेगा?
(क) व्यवसाय		
(ख) पेशा		
(ग) रोज़गार		

2. यदि आवश्यकता हो तो निम्न वाक्यों को ठीक कीजिए :

(क) व्यवसाय कार्य के अवसरों को न्यूनतम करता है और इस प्रकार से देश में रोजगार उत्पन्न करता है।

(ख) अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं निर्यात से राष्ट्रीय छवि धूमिल होती है।

(ग) व्यावसायिक उद्देश्यों को केवल लाभ अर्जन पर ही केन्द्रित होना चाहिए।

टिप्पणी

(घ) रोजगार के अवसर पैदा करना एवं कर तथा अन्य बकाया राशि का सरकार को ईमानदारी से भुगतान करना व्यवसाय के राष्ट्रीय उद्देश्य हैं।

(ङ) करों की बचत के लिए व्यवसायी को झूठे खाते तैयार करने चाहिए।

(च) व्यवसाय में लाभ की कोई भूमिका नहीं है।

3. निम्नलिखित मामलों में व्यावसायिक जोखिमों की पहचान करें –

(क) एक्स लि. को बादल के फटने से हानि हुई –

अ) प्राकृतिक कारण　　ब) राजनैतिक कारण

स) भौतिक कारण　　द) आर्थिक कारण

(ख) वाई लि. में अंकेक्षक ने कर्मचारियों के किसी समूह द्वारा रोकड़ के दुरूपयोग की पहचान की–

अ) प्राकृतिक कारण　　ब) मानवीय कारण

स) भौतिक कारण　　द) राजनैतिक कारण

(ग) सुजकी लि. को सुनामी के कारण हानि हुई–

अ) प्राकृतिक कारण　　ब) मानवीय कारण

स) आर्थिक कारण　　द) राजनैतिक कारण

1.5 व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण

यदि आप अपने चारों ओर नजर दौड़ाएंगे तो एक अर्थव्यवस्था में होने वाली विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक क्रियाओं को देखेंगे। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

- तेल, प्राकृतिक गैस एवं खनिज का उत्खनन;
- वस्तुओं का विनिर्माण;
- एक स्थान/ देश से वस्तुओं का क्रय कर उन्हें विभिन्न स्थानों में/देशों को बेचना;
- भवन, सड़क एवं पुलों आदि का निर्माण;
- टिकट बनाना, भंडारण, परिवहन, बैंकिंग, बीमा आदि सेवाएं प्रदान करना।

यदि हम उपर्युक्त व्यावसायिक क्रियाओं का विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि व्यावसायिक क्रियाओं का सम्बन्ध या तो वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं प्रक्रियण से होता है या उनके वितरण से। पहले वाली व्यावसायिक क्रियाएं (वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन/प्रक्रियण) **'उद्योग'** और बाद वाली व्यावसायिक क्रियाएं (वितरण) **'वाणिज्य'** कहलाती हैं। इस प्रकार

टिप्पणी

व्यवसाय को हम 'उद्योग' एवं 'वाणिज्य' में वर्गीकृत कर सकते हैं। आइए, अब इन दो वर्गों के सम्बन्ध में विस्तार से जानें।

1.6 उद्योग

उद्योग मूल रूप से वह सभी व्यावसायिक क्रियाएं हैं जिनका सम्बन्ध वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन और प्रक्रियण से है। इसमें कच्चे माल या अर्धनिर्मित माल को तैयार माल में परिवर्तित किया जाता है। जमीन से कच्चे माल का खनन, वस्तुओं का विनिर्माण, फसल उगाना, मछली पालन एवं फूलों की खेती आदि उद्योग के उदाहरण हैं। इन क्रियाओं को औद्योगिक क्रियाएं एवं इन क्रियाओं को करने वाली इकाइयों को औद्योगिक इकाइयाँ कहते हैं। यदि व्यापक अर्थों में लें तो बैंकिंग, बीमा, परिवहन आदि सेवाएं प्रदान करना भी उद्योग का अंग हैं तथा इन्हें **'सेवा उद्योग'** कहते हैं।

उद्योगों का वर्गीकरण

क्रियाओं की प्रकृति के आधार पर उद्योग का वर्गीकरण करने से पहले, आइए, वर्गीकरण के विभिन्न आधारों पर विस्तार से विचार करें।

क्रिया की प्रकृति के आधार पर	*उत्पादित वस्तुओं की प्रकृति के आधार पर*	*निवेश की मात्रा के आधार पर*	*क्रियाओं के आकार के आधार पर*
(क) प्राथमिक उद्योग	(क) उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योग	(क) भारी उद्योग	(क) लघु पैमाने के उद्योग
(ख) द्वितीयक उद्योग	(ख) उत्पादक अथवा पूँजीगत वस्तुओं के उद्योग	(ख) हल्के उद्योग	(ख) बड़े पैमाने के उद्योग
(ग) सेवा उद्योग			

आइए, अब क्रिया की प्रकृति के आधार पर उद्योग के वर्गीकरण के सम्बन्ध में विस्तार से जानें।

(क) प्राथमिक उद्योग : प्राथमिक उद्योग से अभिप्राय प्राकृतिक संसाधनों जैसे कोयला, तेल, खनिज पदार्थ आदि के निष्कर्षण एवं जैविक पदार्थ जैसे पौधे, पशु आदि के प्रजनन एवं विकास से जुड़ी क्रियाओं से है। प्राथमिक उद्योग को निष्कर्षण एवं जननिक उद्योगों में विभक्त किया जा सकता है। आपने ओ.एन.जी.सी. के सम्बन्ध में तो सुना ही होगा। यह एक कम्पनी है जो जमीन से तेल एवं प्राकृतिक गैस निकालती है। इसी प्रकार हमारे किसान हैं जो फसल उगाते हैं, व्यावसायिक गृह हैं जो धरती से कच्चे माल/खनिज पदार्थों का निष्कर्षण करते हैं (जैसे कोयले की खानें, कच्चे लोहे की खानें आदि), पुनः प्रक्रियण के लिए जंगल से सामग्री एकत्रित करते हैं जैसे (प्राकृतिक शहद, लकड़ी आदि), समुद्र/नदी से चीजें निकालते हैं (जैसे मछली, झींगा, केकड़ा, समुद्री खाद्यपदार्थ आदि)। यह सभी **निष्कर्षण उद्योग** के उदाहरण हैं।

टिप्पणी

क्या आपने मुर्गी–पालन केन्द्र, सेबों के बाग अथवा पौध–शाला (नर्सरी) देखी हैं? ये सभी उद्योग पशु एवं पक्षियों के पालन एवं प्रजनन में लगे हैं या विक्रय हेतु पौधे अथवा फूल उगाने में लगे हैं। ऐसे उद्योगों को **जननिक उद्योग** कहते हैं। आजकल जननिक उद्योगों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इनमें बागवानी (फल एवं सब्जी उगाना), फूलों की खेती (फूल उगाना), दुग्ध उत्पादन, मुर्गी–पालन, मत्स्य–पालन (मछली प्रजनन) आदि सम्मिलित हैं।

(ख) **द्वितीयक उद्योग :** प्राथमिक उद्योगों के उत्पादों को सामान्यतः विभिन्न प्रकार के तैयार मालों के उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। ये द्वितीयक उद्योग ही हैं जो प्राथमिक उद्योग के उत्पादों को कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त करते हैं। द्वितीयक उद्योग की क्रियाएं विनिर्माण अथवा निर्माण क्रियाएं हो सकती हैं। विनिर्माण उद्योग कच्चे माल अथवा अर्धनिर्मित माल से तैयार माल का उत्पादन करते हैं। उदाहरण के लिए कपास का उपयोग कपड़ा बनाने, लकड़ी का प्रयोग फर्नीचर बनाने, बाक्साइड का उपयोग अल्म्यूनियम बनाने के लिए किया जाता है। भवन, बांध, पुल, सड़क, रेल, नहर, सुरंग आदि तैयार करना **निर्माण उद्योग** कहलाते हैं। यह अन्य उद्योगों के उत्पादों का उपयोग करके ग्राहकों की आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार के ढांचे तैयार करते हैं।

(ग) **सेवा उद्योग :** यह उद्योग मूलतः विभिन्न सेवाओं की उत्पत्ति अथवा प्रक्रियण से सम्बन्धित है तथा प्राथमिक उद्योग, द्वितीयक उद्योग व व्यापारिक क्रियाओं के क्रियान्वयन में सहायता करते हैं। इसमें बैंकिंग, बीमा, परिवहन आदि सेवा उद्योग सम्मिलित हैं। फिल्म उद्योग जो लोगों का मनोरंजन करता है तथा फिल्मों का निर्माण करता है, पर्यटन उद्योग जो लोगों के लिए यात्रा टिकट एवं होटल के कमरे आरक्षित करके उनकी यात्रा सुखद बनाता है, इसी वर्ग में आते हैं।

विनिर्माण उद्योग को निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है :

(i) **विश्लेषणात्मक उद्योग** में एक ही उत्पाद के विभिन्न तत्वों को अलग-अलग करके एवं उसका विश्लेषण करके विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार करते हैं। पैट्रोल, डीज़ल, मिट्टी का तेल, मशीनों में चिकनाई लाने वाला तेल आदि का तेल शोधन कारखानों में कच्चे तेल की सहायता से उत्पादन किया जाता है।

(ii) **कृत्रिम-तन्तु उद्योग** में विभिन्न तत्वों को मिलाकर एक नए उत्पाद का निर्माण करते हैं। जैसे कि पोटेशियम कार्बोनेट तथा वनस्पति तेल को मिलाकर साबुन का उत्पादन किया जाता है। इसी प्रकार चूना, कोयले तथा अन्य रसायनों के संयोग से सीमेन्ट का उत्पादन किया जाता है।

(iii) **प्रक्रियण उद्योग,** वह उद्योग हैं जिनमें अन्तिम उत्पाद को प्राप्त करने के लिए कच्चे माल को विभिन्न क्रमिक चरणों के प्रक्रियण से गुज़रना पड़ता है। कपड़ा, चीनी एवं कागज़ प्रक्रियण उद्योग के उदाहरण हैं।

(iv) संकलन उद्योग में विभिन्न विनिर्मित उत्पादों को इकठ्ठा करके एक नया उत्पाद तैयार करते हैं। जैसे कार, स्कूटर, साइकल, रेडियो, टेलीविजन आदि तैयार करना।

उद्योगों का वर्गीकरण

(क्रियाओं की प्रकृति पर आधारित)

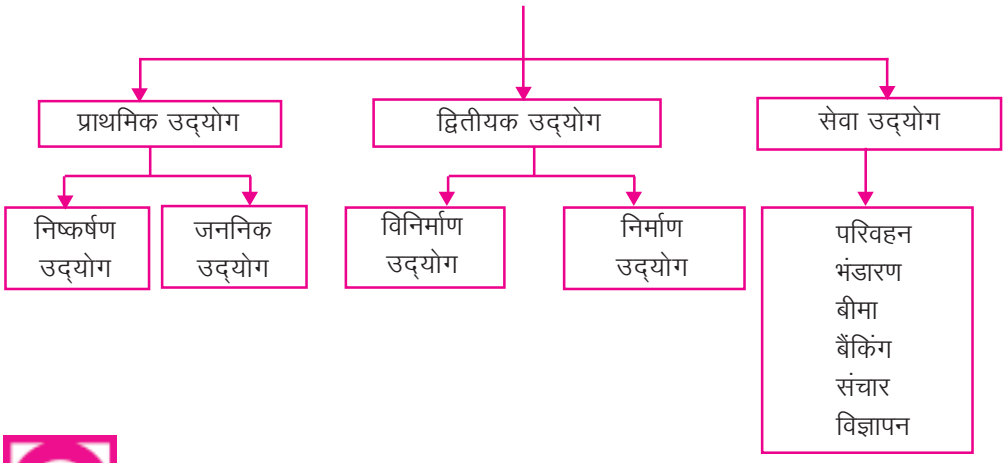

पाठगत प्रश्न 1.4

1. नीचे कुछ उद्योगों के समूह दिये गये हैं। प्रत्येक समूह में कोई एक उद्योग ऐसा है जो समूह से मेल नहीं खाता। उस उद्योग की पहचान कर रेखांकित कीजिए। प्रथम प्रश्न आपके लिए हल कर दिया गया है। इसमें कपड़ा उद्योग को छोड़कर सभी अन्य उद्योग निष्कर्षण उद्योग हैं।

   (क) कृषि, वनजनित, कपड़ा, मत्स्य पालन।

   (ख) बांध, सड़क, नहर, सीमेन्ट।

   (ग) मुर्गीपालन, आखेट (शिकार करना), खनन, वनजनित।

   (घ) लोहा एवं इस्पात, कपड़ा, रसायन कार्य, मत्स्य पालन।

   (ङ) तेल खोजना, कृषि, दुग्ध उत्पादन, आखेट (शिकार करना)।

   (च) फूलों की खेती, फिल्मों का निर्माण, परिवहन, बैंकिंग।

2. निम्न चार्ट को पूरा कीजिए :

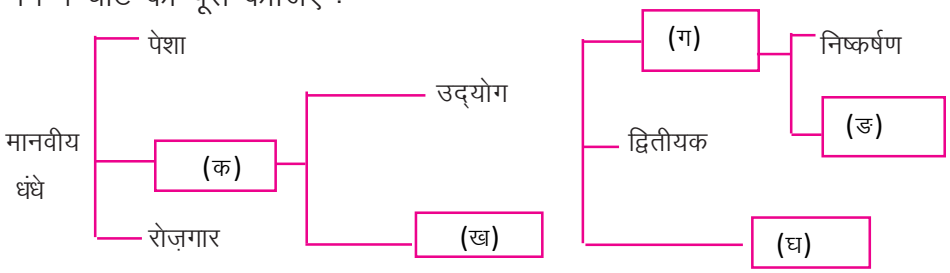

टिप्पणी

1.7 वाणिज्य

सभी उत्पादित वस्तुएं एवं सेवाएं लोगों को उपलब्ध कराने के लिए कुछ अतिरिक्त क्रियाएं की जाती हैं। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति डबलरोटी का उत्पादन करता है तो उसे डबलरोटी को उचित स्थान एवं सही समय पर उपलब्ध कराना होता है। इसके लिए वह जो क्रियाएं करता है वे हैं– लोगों को उत्पाद के सम्बन्ध में सूचित करना, उत्पाद को सही स्थान पर संग्रहीत करना, फुटकर विक्रय की व्यवस्था करना, उत्पाद की पैकेजिंग करना, उत्पाद का परिवहन करना, उत्पाद की बिक्री करना, आदि। ये सभी क्रियाएं वाणिज्य के अन्तर्गत आती हैं। इस प्रकार वाणिज्य वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं के बीच एक कड़ी का काम करता है तथा उनके क्रय–विक्रय को सुगम बनाता है। वास्तव में यह उन सभी कार्यों को करता है जो ग्राहकों को वस्तुएं एवं सेवाएं बिना किसी रुकावट के प्रवाहित एवं प्रदान करने के लिए आवश्यक हैं। अतः वाणिज्य में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

(क) वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय एवं विक्रय; तथा

(ख) उत्पादन स्थल से उपभोक्ता स्थल तक बिना रुकावट के वस्तुओं एवं सेवाओं के सुगम प्रवाह को बनाए रखने के लिए आवश्यक क्रियाएं।

पहली क्रिया अर्थात् वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय–विक्रय व्यापार कहलाता है तथा दूसरी क्रिया अर्थात् उपभोक्ताओं को वस्तुओं एवं सेवाओं के सुगम प्रवाह को सुनिश्चित करना 'व्यापार की सहायक क्रियाएं' या 'व्यापार-पूरक क्रियाएं' कहलाती हैं। अतः वाणिज्य को निम्न वर्गों में बांटा जा सकता है :–

(1) व्यापार; एवं

(2) व्यापार की सहायक क्रियाएं

आइए, अब वाणिज्य की इन दो क्रियाओं के सम्बन्ध में विस्तार से जानें।

1.7.1 व्यापार

व्यापार वाणिज्य का एक अभिन्न अंग है। सरल शब्दों में इसका आशय, वस्तुओं एवं सेवाओं के हस्तान्तरण अथवा विनिमय से है। यह अन्तिम उपभोक्ताओं को वस्तुएं एवं सेवाएं उपलब्ध कराने में सहायता करता है। बड़ी मात्रा में वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने वालों के लिए सीधे उपभोक्ता को इन्हें बेचना कठिन हो जाता है। कारण कोई भी हो सकता है, जैसे उत्पादन स्थल से उपभोक्ताओं की दूरी अथवा किसी एक समय पर क्रय की गई उत्पाद की मात्रा, भुगतान की समस्या आदि। इसीलिए ये उन व्यावसायिक इकाइयों या व्यक्तियों की सेवाएं लेते हैं जो उत्पादक से वस्तुएं खरीदकर उपभोक्ताओं को बेचते हैं। उदाहरण के लिए स्थानीय किरयाने की एक दुकान का स्वामी उत्पादकों से माल का क्रय कर उन्हें उपभोक्ताओं को बेचता है। कभी–कभी वह वस्तुओं को उन थोक विक्रेताओं से भी खरीदता

टिप्पणी

है जो उत्पादकों से बड़ी मात्रा में क्रय करके बेचते हैं। हम कह सकते हैं कि थोक विक्रेता एवं किरयाने की दुकान का स्वामी दोनों ही व्यापारिक क्रियाओं में संलग्न हैं। इस प्रकार व्यापार के लक्षणों को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है–

(क) इसमें वस्तुओं का वास्तविक क्रय–विक्रय होता है।

(ख) इसमें वस्तुओं को किसी एक स्थान या व्यक्ति से क्रय करके किसी अन्य व्यक्ति को या किसी अन्य स्थान पर बेचा जाता है।

(ग) व्यापारी वस्तुओं के वितरण को सुगम बनाते हैं।

(घ) व्यापार मांग एवं पूर्ति में समानता लाता है। उदाहरण के लिए पंजाब राज्य चावल का अधिक मात्रा में उत्पादन कर रहा है जबकि उसके अपने राज्य में इसकी मांग बहुत अधिक नहीं है। व्यापारी पंजाब से चावल खरीदकर इसे उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों को उपलब्ध कराते हैं जहां चावल की मांग बहुत अधिक है। इस प्रकार मांग एवं आपूर्ति का अनुपात बना रहता है।

प्रचालन के आधार पर व्यापार को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है :

(क) आन्तरिक व्यापार, एवं (ख) बाह्य व्यापार

(क) आन्तरिक व्यापार : जब व्यापार एक देश की भौगोलिक सीमाओं के अन्दर होता है तो इसे आन्तरिक व्यापार कहते हैं। इस का अर्थ है कि क्रय एवं विक्रय दोनों एक ही देश के अन्दर हो रहे हैं। उदाहरण के लिए एक व्यापारी लुधियाना के निर्माताओं से बड़ी मात्रा में ऊनी वस्त्र खरीदकर उन्हें दिल्ली के विक्रेताओं को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में बेच सकता है। इसी प्रकार से गांव का एक व्यापारी निर्माताओं से या शहर के बाजार से वस्तुओं का क्रय करके थोड़ी–थोड़ी मात्रा में गांव के लोगों को/उपभोक्ताओं को बेचता है। इन दो उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि आन्तरिक व्यापार दो प्रकार का हो सकता है (क) उत्पादक से बड़ी मात्रा में क्रय करके विक्रेताओं को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में बेचना (जिसे थोक व्यापार कहते हैं) अथवा (ख) उत्पादकों/विक्रेताओं से खरीदकर सीधे उपभोक्ताओं को बेचना (जिसे फुटकर व्यापार कहते हैं)।

(ख) बाह्य व्यापार : विभिन्न देशों के व्यापारियों के बीच होने वाला व्यापार बाह्य व्यापार कहलाता है। दूसरे शब्दों में बाह्य व्यापार किसी देश की सीमाओं के बाहर वस्तुओं/सेवाओं का क्रय एवं/अथवा विक्रय करना है। यह निम्न में से किसी भी रूप में हो सकता है:

(i) 'अ' देश की फर्में 'ब' देश की फर्मों से अपने देश में विक्रय के लिए माल का क्रय करती हैं। इसे **'आयात व्यापार'** कहते हैं।

टिप्पणी

(ii) 'अ' देश की फर्में अपने देश में उत्पादित वस्तुएं 'ब' देश की फर्मों को बचेता है। इसे **निर्यात व्यापार** कहते हैं।

(iii) 'अ' देश की फर्में 'ब' देश की फर्मों से 'स' देश की फर्मों को बेचने के लिए माल का क्रय करता है। इसे **पुनः निर्यात व्यापार** कहते हैं।

1.7.2 व्यापार सहायक क्रियाएं

वस्तुओं के क्रय एवं विक्रय (व्यापार) को सुगम बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की अन्य क्रियाओं को सम्पन्न करने की आवश्यकता होती है। इनमें वस्तुओं का परिवहन, भंडारण, वित्तीय लेन–देन एवं वस्तुओं का बीमा आदि सम्मिलित हैं। उदाहरण के लिये जब चेन्नई का एक व्यापारी दिल्ली के व्यापारी से माल क्रय करता है या सिंगापुर से आयात करता है तो उसे वस्तुओं के क्रय एवं विक्रय के अतिरिक्त निम्न क्रियाएं भी करनी होती हैं :

- वस्तुओं को भौतिक रूप से दिल्ली/सिंगापुर से चैन्नई ले जाना (जिसे परिवहन कहते हैं);
- चैन्नई में वस्तुओं के पहुंचने के बाद उनका व्यवस्थित रूप से संग्रहण करना (जिसे भंडारण कहते हैं);
- बैंक एवं अन्य स्रोतों के माध्यम से धन की व्यवस्था करना एवं भुगतान करना (जिसे बैंकिंग कहते हैं);
- दिल्ली/सिंगापुर से वस्तुएं लाते समय मार्ग में अथवा भंडारण में वस्तुओं को क्षति पहुँचने/हानि हो जाने की दशा में जोखिम से बचना (जिसे बीमा कहते हैं);
- डाक एवं टेलीविजन सेवाओं के माध्यम से एक दूसरे से सूचना का आदान–प्रदान करना (जिसे सम्प्रेषण कहते हैं);
- विभिन्न माध्यमों से उत्पाद सम्बन्धी सूचनाएं उपभोक्ताओं तक सम्प्रेषित करना (जिसे विज्ञापन कहते हैं)।

उपरोक्त सभी क्रियाएं व्यापारिक क्रियाओं को सुगम बनाने अथवा उनका प्रचालन करने में सहायक होती हैं। इसीलिए इन्हें व्यापार की सहायक क्रियाएं कहते हैं। अतः व्यापार की सहायक क्रियाएं वह क्रियाएं हैं जो व्यापार को सुगम बनाती हैं। यह क्रियाएं न केवल व्यापारिक क्रियाओं को सुगम बनाती हैं बल्कि समस्त व्यवसाय को इसके सफल प्रचालन में आवश्यक सहयोग प्रदान करती हैं। अतः इन्हें व्यवसाय की पोषक क्रियाएं भी कहते हैं। अगले अध्याय में हम व्यवसाय की इन सभी सहायक सेवाओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

टिप्पणी

वाणिज्य का वर्गीकरण

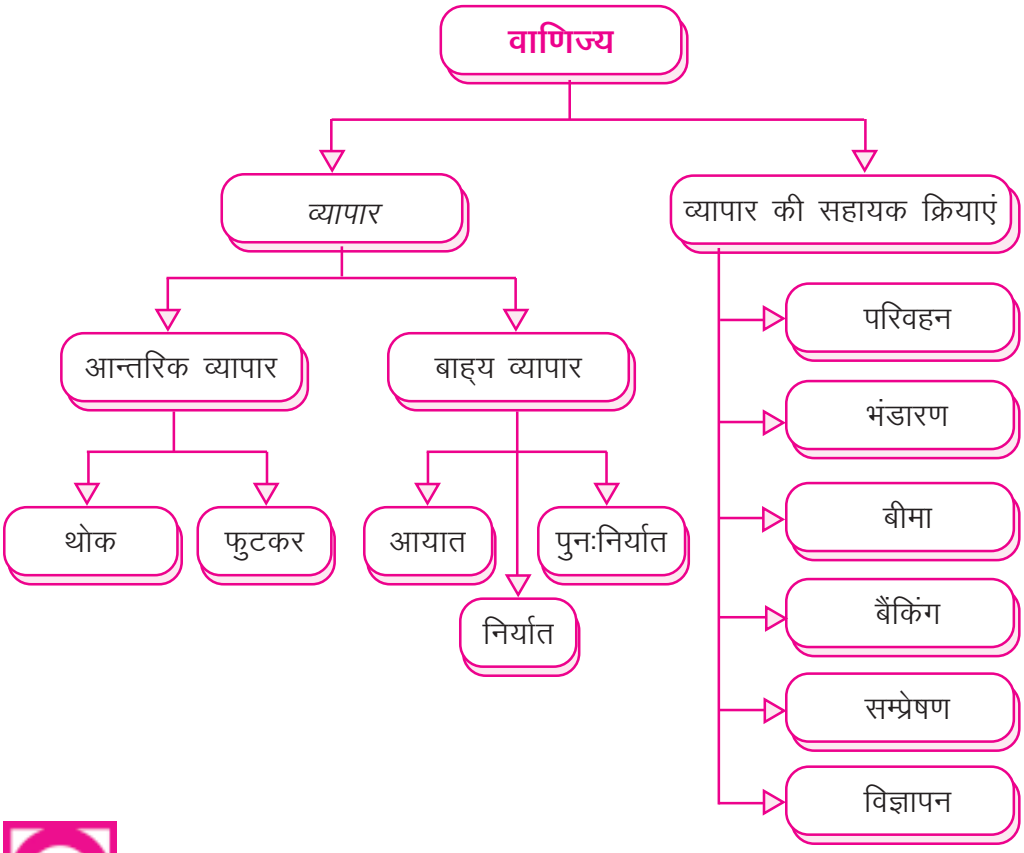

पाठगत प्रश्न 1.5

1. निम्न वाक्यों के लिए एक प्रतिस्थापन पूरक शब्द दीजिए :

   (क) वस्तुओं एवं सेवाओं के विनिमय एवं वितरण की प्रक्रिया।

   (ख) वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय–विक्रय।

   (ग) वस्तुओं एवं सेवाओं का बड़ी मात्रा में क्रय–विक्रय।

   (घ) निर्यात के लिए वस्तुओं का आयात।

   (ङ) वस्तुओं का दो विभिन्न देशों के बीच क्रय–विक्रय।

2. नीचे दिये गये शब्दों को पूरा कीजिए। प्रत्येक के लिए दिए गये कथन से सहायता लीजिए। प्रत्येक रिक्त स्थान के लिए एक अक्षर का प्रयोग करना है। पहला प्रश्न आपके लिए हल कर दिया गया है।

   (क) __ __ ज्य (वणिज्य)

   (ख) व्या __ __

टिप्पणी

(ग) भं __ __ ण

(घ) __ र्या __

(ङ) __ नः नि __ __

(च) __ क व्यापार

(छ) फु __ __ र व्यापार

(क) वह सभी क्रियाएं जो उपभोग के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं की उपलब्धता को सुगम बनाती हैं।

(ख) वस्तुओं का क्रय–विक्रय।

(ग) कच्चे माल अथवा तैयार माल के रूप में वस्तुओं का संग्रहण।

(घ) वस्तुओं की विदेशों में बिक्री।

(ङ) एक देश के व्यापारी द्वारा दूसरे देश के व्यापारी से तीसरे देश को बेचने के लिए वस्तुओं का क्रय।

(च) वस्तुओं का बड़ी मात्रा में क्रय–विक्रय।

(छ) वस्तुओं का उपभोक्ता को छोटी–छोटी मात्रा में विक्रय।

आपने क्या सीखा

- मनुष्य अपनी इच्छा एवं आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए अनेकों क्रियाएं करते हैं। ये क्रियाएं **मानवीय क्रियाएँ** कहलाती हैं।
- वे मानवीय क्रियाएं जो जीविकोपार्जन के उद्देश्य से की जाती हैं, **आर्थिक क्रियाएं** कहलाती हैं।
- वे क्रियाएं जो केवल स्वयं की संतुष्टि के लिए की जाती हैं, **अनार्थिक क्रियाएं** कहलाती हैं।
- वे सभी क्रियाएं जिनमें एक व्यक्ति जीविका कमाने के लिए विशिष्ट ज्ञान एवं कौशल का उपयोग करता है, **पेशा** कहलाती हैं।
- जब लोग नियमित रूप से दूसरों के लिए सेवाएं प्रदान करते हैं तथा बदले में उन्हें मजदूरी/वेतन मिलता है तो हम इसे **रोज़गार** कहेंगे।
- लाभोपार्जन के उद्देश्य से की गई, नियमित उत्पादन अथवा विक्रय, हस्तान्तरण एवं विनिमय की क्रियाएं **व्यवसाय** कहलाती हैं।

टिप्पणी

- उचित लाभ कमाना, नये बाजारों की खोज करना, व्यवसाय का विकास एवं विस्तार करना, उपलब्ध संसाधनों का नवीन एवं अनुकूलतम उपयोग व्यवसाय के **आर्थिक उद्देश्य** हैं।
- व्यवसाय के **सामाजिक उद्देश्यों** में, गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उत्पादन, उचित मूल्य, सामान्य कल्याण तथा समाज का उत्थान, उचित लेन-देन एवं निवेशकों को उचित प्रतिफल सम्मिलित हैं।
- **मानवीय उद्देश्यों** में कर्मचारियों को उचित पारिश्रमिक एवं प्रोत्साहन, उचित कार्य दशाएं, कार्य संतुष्टि, प्रशिक्षण, विकास एवं पदोन्नति के अवसर आदि सम्मिलित हैं।
- रोजगार के अवसर पैदा करना, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय हित एवं प्राथमिकताएं तथा सरकार को करों का ईमानदारी से भुगतान व्यवसाय के **राष्ट्रीय उद्देश्य** हैं।
- व्यवसाय के **वैश्विक उद्देश्यों** में वैश्विक प्रतियोगी वस्तुओं/सेवाओं को उपलब्ध कराना एवं व्यावसायिक क्रियाओं का विस्तार करके धनी एवं गरीब देशों के बीच की दूरी को कम करना सम्मिलित हैं।
- लाभ की आवश्यकता व्यवसाय के जीवित रहने, भविष्य में इसके विकास एवं विस्तार, साख सृजन, उद्देश्यों की प्राप्ति तथा व्यवसाय की कार्यकुशलता को मापने के लिए होती है।
- व्यवसायिक जोखिम का अर्थ भविष्य में अनिश्चित क्रियाओं के होने के कारण हुई हानि से है।
- व्यवसायिक जोखिम अनिश्चित होता है, इसे मापना कठिन होता है, यह कम अथवा अधिक हो सकता है तथा यह व्यवसाय का एक आवश्यक तत्व होता है।
- व्यवसायिक जोखिम प्राकृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, मानवीय, भौतिक तथा तकनीकी कारणों से होता है।
- **उद्योग** का अर्थ वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से, उगाने से अथवा प्रक्रियण से है। प्रकृति के आधार पर इन्हें प्राथमिक, द्वितीयक एवं सेवा उद्योगों में बांटा गया है।
- **प्राथमिक उद्योग** का सम्बन्ध प्राकृतिक संसाधनों से निष्कर्षण तथा जैविक पदार्थों के प्रजनन एवं विकास से है। इसे निष्कर्षण एवं जननिक उद्योगों में बांटा जा सकता है।
- **द्वितीयक उद्योग** प्राथमिक उद्योग के उत्पादों को कच्चे माल के रूप में उपयोग में लाते हैं। यह या तो विनिर्माण उद्योग हो सकते हैं अथवा निर्माण उद्योग हो सकते हैं।
- **विनिर्माण उद्योग** तैयार वस्तुओं के उत्पादन में संलग्न हैं। इन्हें पुनः विश्लेषणात्मक, कृत्रिम तन्तु, प्रक्रियण एवं संकलन उद्योगों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

टिप्पणी

- **सेवा उद्योग** का सम्बन्ध ग्राहकों के लिए विभिन्न प्रकार की सेवाओं की उत्पत्ति एवं प्रक्रियण से है।
- **वाणिज्य** उन सभी क्रियाओं का कुलयोग है जो वस्तुओं एवं सेवाओं की विनिमय प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं को दूर करती हैं तथा उपभोग के लिए इनकी उपलब्धता को सुगम बनाती है। इसलिए यह व्यापार एवं व्यापार को सुगम बनाने वाली सहायक सेवाओं से मिलकर बना है।
- **व्यापार** से अभिप्राय वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय एवं विक्रय की प्रक्रिया से है। जब व्यापार एक ही देश की सीमाओं के अन्तर्गत किया जाता है तो उसे **आन्तरिक व्यापार** कहते हैं। जब वस्तुओं को विनिर्माताओं अथवा थोक विक्रेताओं से बड़ी मात्रा में खरीद कर छोटी-छोटी मात्रा में फुटकर विक्रेताओं को बेचा जाता है तो उसे 'थोक–व्यापार' कहते हैं। जब वस्तुओं एवं सेवाओं को विनिर्माताओं अथवा थोक व्यापारियों से खरीदकर उपभोक्ताओं को थोड़ी–थोड़ी मात्रा में बेचा जाता है तो इसे **फुटकर व्यापार** कहते हैं। व्यापार जब दो देशों के बीच होता है तो इसे **बाह्य व्यापार** कहते हैं। जब वस्तुओं का क्रय विदेशों से किया जाता है तो इसे **आयात व्यापार** कहते हैं। जब विदेशों में माल का विक्रय किया जाता है तो उसे **निर्यात व्यापार** कहा जाता है। जब वस्तुओं को किसी एक देश से क्रय करके किसी दूसरे देश में बेचा जाता है तो इसे **पुनः निर्यात व्यापार** कहते हैं।
- व्यापार की सहायक क्रियाएं वह होती हैं जो व्यापार को सुगम बनाती हैं। ये क्रियाएं हैं **परिवहन** (वस्तुओं की ढुलाई), **सम्प्रेषण** (सूचना का एकत्रीकरण एवं आदान–प्रदान), **भंडारण** (वस्तुओं को सुरक्षित रखना), **बैंकिंग** (कोष की व्यवस्था करना एवं इससे लेनदेनों को सुगम बनाना), **बीमा** (हानि के जोखिम से बचना) एवं **विज्ञापन** (उपभोक्ताओं को सूचनाएं प्रदान करना)

मुख्य शब्द

विश्लेषणात्मक उद्योग	पुनःनिर्यात व्यापार	प्रक्रियण उद्योग
संकलन उद्योग	निर्यात व्यापार	पेशा
व्यापार की सहायक क्रियाएं	निष्कर्षण उद्योग	फुटकर व्यापार
बैंकिंग	जननिक उद्योग	द्वितीयक उद्योग
व्यवसाय	मानवीय क्रिया	कृत्रिम तन्तु उद्योग
वाणिज्य	आयात व्यापार	सेवा उद्योग
सम्प्रेषण	उद्योग	व्यापार

टिप्पणी

निर्माण उद्योग	बीमा	परिवहन
आर्थिक क्रिया	आन्तरिक व्यापार	भंडारण
रोज़गार	अनार्थिक क्रिया	थोक व्यापार
प्राथमिक उद्योग	विज्ञापन	

पाठान्त प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'मानवीय क्रिया' का क्या अर्थ है?
2. 'धंधा' शब्द को परिभाषित कीजिए।
3. 'उपभोक्ता वस्तुओं' एवं 'पूँजीगत वस्तुओं' में अन्तर्भेद कीजिए।
4. 'जननिक उद्योग' का अर्थ बताइए।
5. 'व्यापार' किसे कहते हैं?
6. व्यवसायिक जोखिम के किन्हीं दो भौतिक कारणों के नाम बताइए।
7. व्यवसाय में हानि के किन्हीं दो मानवीय कारणों की सूची दीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

8. 'प्राथमिक उद्योग' के विभिन्न प्रकारों को समझाइए?
9. व्यावसायिक क्रियाओं को वर्गीकृत कीजिए।
10. आर्थिक एवं अनार्थिक क्रियाओं में अन्तर्भेद कीजिए।
11. व्यवसाय की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
12. व्यवसाय के कोई तीन आर्थिक उद्देश्य बताइए।
13. व्यवसायिक जोखिमों की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
14. व्यवसायिक जोखिम के किन्हीं तीन भौतिक कारणों का उल्लेख कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

15. आधुनिक समाज में व्यवसाय के महत्व का वर्णन कीजिए।
16. पेशे का क्या अर्थ है? इसकी विशेषताओं को संक्षेप में समझाइए।
17. व्यवसाय के विभिन्न 'मानवीय उद्देश्यों' को समझाइए।
18. 'उद्योग' शब्द का अर्थ बताइए। विभिन्न आधारों पर उद्योग के वर्गीकरण को समझाइए।

टिप्पणी

19. 'वाणिज्य' शब्द की परिभाषा दीजिए। वाणिज्य से सम्बन्धित विभिन्न क्रियाओं का वर्णन कीजिए।

20. व्यवसाय में लाभ की भूमिका को समझाइए।

21. व्यवसायिक जोखिम से आप क्या समझते हैं? व्यवसायिक जोखिमों के प्राकृतिक कारणों को समझाइए।

22. व्यवसायिक जोखिमों के कारणों का वर्णन कीजिए।

23. ''व्यवसाय में लाभ की वही भूमिका होती है जो लहू की मनुष्य की शरीर में।'' इस कथन को ध्यान में रखते हुए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कीजिए।

24. आपका मित्र रमेश व्यवसाय प्रारम्भ करना चाहता है। इसीलिए वह व्यवसाय में जोखिमों और उनके कारणों को जानना चाहता है। उसे व्यवसाय के जोखिमों का अर्थ और उनके कारणों को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. वह सभी क्रियाएं जो धनोपार्जन अथवा जीविकोपार्जन के उद्देश्य से की जाती हैं आर्थिक क्रियाएं कहलाती हैं।

2. (क) एक व्यक्ति का विद्यालय के बगीचे में कार्य करना।
(ख) एक महिला का जलपान गृह में खाना बनाना।
(ग) एक व्यक्ति द्वारा व्यापार केन्द्र में सफेदी करना।
(घ) एक अध्यापक का विद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ाना।
(ङ) एक चार्टर्ड अकाउन्टैंट द्वारा किसी दूसरे की फर्म के खाते तैयार करना।

1.2 2.

व्यवसाय	**पेशा**	**रोज़गार**
(घ) (ङ) (च)	(झ) (ज)	(क) (ख) (ग) (घ) (ज)

1.3 1.

यदि वह चयन करता है	**उसे क्या करना है? क्या मिलेगा**	**प्रतिफल के रूप में**
(क) व्यवसाय	दवाइयों की दुकान खोल सकता है अथवा दवाईयां बनाने की कंपनी खोल सकता है	लाभ

टिप्पणी

(ख) पेशा	अपने स्वयं का उपचार केन्द्र प्रारम्भ करना	फीस
(ग) रोज़गार	अस्पताल में कार्य करना	वेतन

2. (क) व्यवसाय कार्य के अधिकतम अवसर प्रदान करके देश में रोज़गार उत्पन्न पैदा करता है।
   (ख) अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करके एक देश की छवि में सुधार होता है।
   (ग) व्यावसायिक उद्देश्य केवल लाभ अर्जन पर केन्द्रित नहीं होने चाहिए।
   (घ) यह वाक्य ठीक है इसमें किसी संशोधन की आवश्यकता नहीं है।
   (ङ) व्यवसायी को सही खाते तैयार करने चाहिए तथा कर का ईमानदारी से भुगतान करना चाहिए।
   (च) लाभ की व्यवसाय में महत्वपूर्ण भूमिका है।

3. (क) स (ख) ब (ग) अ

1.4 1. (ख) सीमेन्ट (ग) मुर्गीपालन (घ) मत्स्य पालन
(ङ) दुग्ध उत्पादन (च) फूलों की खेती

2. (क) व्यवसाय (ख) वाणिज्य (ग) प्राथमिक
(घ) सेवा (ङ) जननिक

1.5 1. (क) वाणिज्य (ख) व्यापार (ग) थोक व्यापार
(घ) पुनःनिर्यात (ङ) बाह्य व्यापार

2. (ख) व्यापार (ग) भंडारण (घ) निर्यात
(ङ) पुनःनिर्यात (च) थोक व्यापार (छ) फुटकर व्यापार

करें एवं सीखें

अपने क्षेत्र के कम से कम दस व्यावसायिक इकाइयों की सूची बनाइए। उन्हें उद्योग, व्यापार, एवं व्यापार की सहायक क्रियाओं में विभक्त कीजिए। उनकी क्रियाओं की प्रकृति को जानकर एक चार्ट बनाइए।

अभिनयन

1. रामेश्वर का बेटा रामपाल सरकारी नौकरी करना चाहता है। उसके पिता ऐसा नहीं चाहते। वह चाहते हैं कि रामपाल स्वयं का व्यवसाय आरम्भ करे। रामेश्वर और उसके बेटे रामपाल के बीच निम्न वार्तालाप हुआ :

टिप्पणी

रामेश्वर : बेटा, मैं चाहता हूँ कि तुम जीवन में स्वाबलंबी बनो। इसलिए व्यवसाय प्रारम्भ करो।

रामपाल : पिताजी, मैं अपनी स्वतंत्रता से अधिक, अपनी जीविका से संतुष्टि की अधिक चिंता करता हूं। मैं सरकारी नौकरी करना चाहता हूँ।

रामेश्वर : सुनो, संतुष्टि नाम की कोई चीज नहीं होती। व्यवसाय से तुम्हें अधिक धन प्राप्त होगा और रूतबा मिलेगा। जीवन में व्यवहारिक बनो।

रामपाल : पिताजी, मैंने धन को जीवन में दूसरे स्थान पर रखा है, ईमानदारी से जनता की सेवा करने पर मुझे अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी।

अपने लिए और अपने मित्र के लिए भूमिका चुनें तथा उदाहरण में दिए गए विचार के पक्ष में और विरोध में अपना तर्क दीजिए।

आप इस पाठ में दी गई किसी भी अन्य अवधारणा के चयन के लिए स्वतंत्र हैं और आलेख विकसित कर सकते हैं। अपनी भूमिका को निभाना शुरू कीजिए और अध्ययन का आनन्द उठाइए।

2. समीर सेवा उद्योग के क्षेत्र में व्यवसाय प्रारम्भ करने में रूचि रखता है। उसकी मित्र मान्या ने उसे बताया कि इस क्षेत्र में अनेक अवसर हैं। दोनों के बीच वार्तालाप इस प्रकार था :

समीर : मान्या! मैं सेवा उद्योग के क्षेत्र में व्यवसाय प्रारम्भ करना चाहता हूं।

मान्या : बहुत अच्छी बात है। यह अच्छा विचार है। मैंने अपने व्यवसाय अध्ययन की पुस्तक में पढ़ा है कि सेवा उद्योग में कई अवसर उपलब्ध हैं।

समीर : कृपया मुझे इन अवसरों के सम्बन्ध में बताइए।

अपने और अपने मित्र के लिए भूमिका का चयन कीजिए और सेवा उद्योग के विभिन्न प्रकारों को समझाते हुए अपनी बातचीत को आगे बढ़ाइए।